अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
विद्या संबल
राजकीय महाविद्यालय–नीमराना
(कोटपूतली–बहरोड़)

सारांश :

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष न केवल पुरूषों की बहादुरी से बल्कि महिलाओं की अदम्य भावना से चिन्हित था, जो अपने पुरूष समकक्षों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी थी। स्वतंत्रता की ओर उथल–पुथल भरी यात्रा के दौरान कई महिलाओं ने अटूट दृढ संकलप, लचीलापन और देशभक्ति का प्रदर्शन किया। इन महिलाओं ने विभिन्न भूमिकाऐं निभाई, जिसमें जनता को संगठित करने से लेकर जुलूसों का नेतृत्व करना, विरोध प्रदर्शनों का आयोजन करना और भूमिगत आन्दोलनों में योगदान देना शामिल था।

भारत देश के स्वाधिनता संग्राम की जब हम बात करते हैं। तो हम सभी पक्षों का अध्ययन करते हैं। चाहे राजनीतिक स्तर पर हो या आर्थिक यदि हम स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर दृष्टि नहीं डालते हैं तो यह अध्ययन अधुरा माना जाएगा। राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं न भारी संख्या में भाग लिया। महिलाओं को पहली बार घर से बाहर किसी गतिविधि में भाग लेने का मौका मिला। भारत देश एक पितृसत्तात्मकता से प्रेरित देश है। पुरूषों के समान महिलाओं को राजनीतिक या सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। यह महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी जिसे पार करके महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी भूमिका अदा नहीं कि बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन को सशस्त्र व दृढ़ बनाया।

महिलाओं के योगदान का महत्व न केवल स्वतंत्रता आन्दोलन की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण था बल्कि लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक मापदंडो को फिर से परिभाषित करने में था। विभिन्न क्षेत्रों, पृष्ठभूमियों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आई महिलाएं स्वतंत्रता के एक साझा झण्डे के नीचे एक जुट हुई भारत के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ गई।

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी महिलाआ की भूमिका के अध्ययन से हम पाते हैं कि स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने व उसको सशक्त बनाने में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं ने स्वाधीनता संग्राम में न केवल अपनी भूमिका को प्रत्यक्ष रूप से निभाया बल्कि इन राष्ट्रीय आन्दोलनों की वजह से महिलाएँ अपनी माँग व अधिकारों को समझने लगी। गाँधी जी द्वारा किये गये आन्दोलनों में महिलाओं ने भाग लिया इन आन्दोलनों का प्रभाव महिलाओं पर प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं अप्रत्यक्ष रू‍ से भी पड़ा। ये आन्दोलन महिलाओं के जीवन से सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गाँधी ने माना कि महिलाओं के धैर्य, सहनशीलता और नैतिक साहस जैसे गुण उन्हें सत्याग्रह के लिए आदर्श बनाते हैं।

असहयोग आन्दोलन : –

सन् 1920–22 में जब असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ तो पहली बार महिलाएँ भारी संख्या में आन्दोलन से जुड़ी। सैकड़ो महिलाएँ खादी और चरखा बेचने गली–गली गई, उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए जुलूस निकाले और समूहों से विदेशी कपड़ों की होली जलाई उन्होंने शराब की दुकानों पर धरना दिया और शराब के लाइसेंस की सरकारी नीलामी को रोका। 1921 के काँग्रेस सम्मेलन में

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

144 महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुम्बई में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन किया जो पूरी तरह एक राष्ट्रीय विजन के प्रति समर्पित थी यह पहला महिला संगठन था जो बिना पुरूषों की मदद से चलाया जाता था इसके दो उद्देश्य थे–स्वराज और महिलाओं उद्धार एवं उत्थान। राष्ट्रीय स्त्री सभा की सभी सदस्य महिलाएँ मुम्बई में खादी प्रचार में लगी थी। उन्होंने 1921 में 'प्रिंस ऑफ वेल्स' की भारत यात्रा के विरोध में पूरे मुम्बई में हड़ताल आयोजित की उन्होंने खादी प्रदर्शनियां आयोजित की, वंचित वर्ग के लिए स्कूल खोले और सड़कों पर खादी बेची। असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी से उन्हें अपने लिए एक जगह मिली, महिलाओं के मन में अपनी उपलब्धियों के प्रति असहास मिला।

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के अपनाने पर बल :–

जो महिलाएँ केवल घरेल् काम काज में फसी रही थी। अनेकों महिलाओं ने अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया – यह महिलाओं के जीवन सुधार में पहला चरण था। जिसमें महिलाएँ घर से बाहर आई। एनी बेसेंट व सरोजनी नायडू जैसी महिला नेताओं से प्रेरित होकर महिलाओं ने राजनीति में शामिल होन की सोची 85 प्रतिशत महिलाएँ, निर्धनता और अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई थी। गाँधी जी ने महिला नेताओं से कहा कि उन्हे सामाजिक सुधार महिला शिक्षा, महिलाओं के अधिकारों के लिए कानून बनाने के लिए काम करना चाहिए। ताकि उन्हें उनके बुनियादी अधिकार मिल सके।

गाँधी ने कहा की भारत इसलिए गरीब हो गया है क्योंकि उन्होंने स्वदेशी हस्तकलाओं का परित्याग करके विदेशी वस्तुओं पर निर्भर रहना शुरू कर दिया है, महिलाओं से कहा स्वदेशी हस्तकलाओं को दुबारा से उत्पन्न करो, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओ, विदेशी वस्तुओं को बन्द करो खरीदना हम दुबारा से समृद्ध हो जायेंगे महिलाएँ अनेक अत्याचार सहन करती थी परन्तु जब महिलाएँ अपने घर से आवाज बाहर आई। उससे उसके जीवन पर काफी असर पड़ा। सम्मान की दृष्टि से परिवार में महिलाओं को उच्च स्थान मिला। इन आन्दोलनों द्वारा महिलाओ के जीवन को बेहतर बनाया अब हम उन सभी आन्दोलनों का वर्णन करते हैं जिनमें महिलाओं के राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भूमिका दिखाई देती है।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन :–

सविनय अवज्ञा आन्दोलन से राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक नया चरण शुरू हुआ। मार्च 1930 (नमक सत्याग्रह) में सविनय अवज्ञा आन्दोलन अहमदाबाद से डांडी तक 240 मील की डांडी यात्रा से शुरू हुआ। यह आन्दोलन अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ने और उनके नमक बनाने के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए चलाया गया था। महिलाएँ इस यात्रा में हिस्सा लेना चाहती थी लेकिन गाँधी जी ने उन्हें यह कहकर मना कर दिया की इससे अंग्रेज सोचेंगे की भारतीय कायर हैं और खुद की बजाय महिलाओं को आगे कर रहे हैं फिर भी जहाँ–जहाँ यात्रा का पड़ाव होता भारी संख्या में महिलाएँ गाँधी जी को सुनने के लिए जमा होती डांडी पहुँचकर गाँधी जी ने महिलाओं का एक सम्मेलन बुलाया और वहाँ उन्होंने महिलाओं के लिए भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई डांडी यात्रा के बाद महिलाओं को आन्दोलन में पूरी तरह सम्मिलित कर लिया गया। जैसे–जैसे आन्दोलन नेताओं ने महिलाओं की भागीदारी पर रोक नहीं लगाई। आन्दोलन के इतिहास में महिलाओं का भी नाम है। राष्ट्रीय आन्दोलन में हर तबके की महिलाएँ जुड़ी सरोजनी नायडू और कमला नेहरू जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया।

भारत छोडो आन्दोलन :–

(1942) महिलाओं ने सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया बडे पैमाने पर रैलियां आयोजित की आन्दोलनों का संदेश फैलाया, गिरफतारियों और कारावास सहन किए और उनके संगठनों ने प्रस्ताव पारित किए, ये सभी ब्रिटिश शासन को समाप्त करने और स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

उन्होंने पुरूष नेताओं की गिरफ्तारी के बाद आन्दोलन को जीवित रखने की जिम्मेदारी अपने उपर ली। वे सभाओं जुलूसों धरना–प्रदर्शनों और नमक बनाने और बेचने के काम में भाग लिया। सविनय अवज्ञा में महिलाओं की भागीदारी को उत्साहपूर्वक देखा गया तथा अपत्याशित गिरफ्तारियाँ भी हुई। 1942 में भारत छोडो आन्दोलन में महिलाओं ने बड़ी भूमिका निभाई थी। काँग्रेस के बड़े नेता पहले से जेल में थे, लेकिन महिलाएँ अंत तक गिरफ्तारी से बचती रही। महिलाएँ पर्चे बनाने, भूमिगत साहित्य प्रसारित करने, काँग्रेस रेडियो चलाने में लगी हुई थी। बन्नु, मेरठ, असम, सागर वर्धा और मद्रास प्रेसीडेंसी जैसे अप्रत्याशित स्थानों पर महिलाओं के जुलूस और सक्रियता देखी गयी।

किसान आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका :–

चम्पारण किसान आन्दोलन :–

चम्पारण किसान आन्दोलन को चम्पारण सत्याग्रह आन्दोलन के नाम से भी जाना जाता है। यह आन्दोलन प्रमुख नेता गाँधी जी के समर्थन में आरम्भ हुआ। इसमें महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया किसान महिलाओं ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की यह आन्दोलन अहिंसक आन्दोलन था। और गाँधी जी तो अंहिसा के पुजारी माने जाते हैं और इस आन्दोलन में गाँधी जी का समर्थन प्राप्त हुआ।

तेभागा आन्दोलन :–

यह आन्दोलन बंगाल सन् (1946–47) में हुआ था। यह एक ऐसा आन्दोलन था जिसने क्रांतिकारी स्वरूप धारण कर लिया था तेभागा आन्दोलन की मुख्य मांग थी कि जब–जब गरीब किसान जमीदारों के खेत जोतता है तो उसे 2/3 मिलना चाहिए, न केवल आधा कृषक महिलाओं ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय आन्दोलन और महिला संगठनों की उत्पत्ति :–

कई महिला संगठन और उनके नटवर्क बने ताकि आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित की जा सके।

(1) देश सेविका संघ (2) नारी सत्याग्रह समिति
(3) महिला राष्ट्रीय संघ (4) लेडीजपिकेटिका बोर्ड
(5) स्त्री स्वराज संघ (6) स्वयं सेविका संघ आदि

इन सबने महिलाओं की लामबंदी जुलूस व प्रभातफेरी निकालने धरने आदि आयोजित करने के काम के साथ–साथ खादी का प्रचार–प्रसार चरखा चलाने का प्रशिक्षण और खादी बेचने आदि के काम भी किए।

प्रमुख संगठनों में

ए.आई.डब्लू.सी. :–

1926 में इसकी स्थापना महिलाओं के शिक्षा प्रसार तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए हुई। उसका मुख्य उद्देश्य यही था कि महिलाओं का जीवन स्तर बेहतर हो और ग्रहिणी की भूमिका को भी बेहतर ढंग से निभा पाएंगी। ललिता का महिलाओं के लिए संदेश व निर्देश था ''उठो जागो अपने देश को अच्छी तरह से देखो''

महिला राष्ट्रीय संघ :–

1928 में स्थापना हुई बंगाल में यह पहला संगठन था जिसने राजनीतिक क्षेत्र में काम करना शुरू किया। इनके उद्देश्यों में मुम्बई के राष्ट्रीय स्त्री सभा की तरह देश की स्वाधीनता और महिलाओं की दशा में सुधार लाना था।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट आन्दोलन में महिलाएँ :–

महिलाएँ क्रांतिकारी आन्दोलनों से भी जुडी हुई थी इसमें अधिकतर छात्राएँ थी। 1920–30 के दशक में क्रांतिकारी आन्दोलन के भीतर महिलाएँ और पुरूष एक दूसरे से दूर रहें इस नियम की पालना काफी गम्भीरता से करने की अपेक्षा की गई। कल्पना दत्त, प्रिति वाडेकर जैसी महिलाओं ने क्रांतिकारी आतंकवादी आन्दोलन में भाग लिया। 1930 के दशक में कई कम्युनिस्ट महिलाएँ नारीवादी क्षेत्र में आई। जिसमें उषाबाई डांगे जैसी कम्युनिस्ट महिलाओं ने मुम्बई में सूती वस्त्र में लगी श्रमिक महिलाओं को संगठित किया। इंग्लैण्ड़ में राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए कम्युनिस्ट तथा राष्ट्रवादी महिलाओं के संयुक्त भागीदारी अभियानों की शुरूवात हुई। तभी से रेणु चक्रवर्ती और कृष्णन जैसे कुछ महिलाएँ माकर्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर 1939–40 में छात्रों का संगठन (AISF) बना जिसमें अनेक जुझारू विचारधाराओं की छात्राएँ शामिल हुई।

प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी :–

भारत में कई प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी थी उनमें कुछ महत्वपूर्ण महिला स्वतंत्रता सेनानी थी।

एनी बेसेंट (1847–1933) :–

यह आयरिश और भारतीय स्वशासन की प्रबल समर्थक थी। इन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी की मैडम बलावात्सकी से प्रभावित होकर थियोसोफी को अपना लिया।

एनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस में शामिल हुई। प्रथम विश्वयुद्ध के छिड़ने पर बेसेर का मानना था कि भारत के पास एक अवसर है और उन्होंने 1916 में अखिल भारतीय होमरूल लीग की स्थापना की तथा पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। एनी बेसेंट सितम्बर 1917 में रिहा होने के बाद दिसम्बर में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस का अध्यक्ष चुना गया, जिसमें महात्मा गाँधी ने उनका समर्थन किया।

शिक्षा के क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय की सह–संस्थापक होना भी शामिल है। उन्होंने पाचीन भारतीय धर्मों दर्शनों और सिद्धान्तों के अध्ययन के महत्व पर जोर दिया।

एनी बेसेंट ने सेन्ट्रल हिन्दु स्कूल की स्थापना की तथा कई संस्थाओं की स्थापना जैसे मद्रास संसद मदन पल्ले कॉलेज अडयार आर्ट्स लीग बोम्बे होमरूल लीग बनारस गर्ल्स कॉलेज आर्डर ऑफ द ब्रदर्स ऑफ सर्विस, अडयार में महिला भारतीय संघ और 1927 में पूना में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन शामिल है।

भीकाजी कामा (1861–1936) :–

भीकाजी कामा ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और स्वराज की वकालात की, 1907 में उन्होंने जर्मनी में भारतीय ध्वज फहराने वाले पहले व्यक्ति बनकर इतिहास रच दिया।

मतंगिनी हाजरा (1870–1942) :–

उन्होंने महात्मां गाँधी से प्रेरणा ली और गाँधी बुरी (बुढी गाँदीवादी महिला) के रूप में जानी गई। वह असहयोग आन्दोलन में शामिल हुई, सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान नमक सत्याग्रह में शामिल होने कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था।

सरोजिनी नायडु (1879–1949) :–

महात्मा गाँधी ने कोकिला के रूप में मान्यता दी थी। उन्होंने एनी बेसेन्ट द्वारा शुरू किए गए होमरूल आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, नायडू सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोडो आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली एक प्रमुख हस्ती के रूप में उभरी वह 1931 में द्वितीय गोलमेज

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

सम्मेलन के लिए महात्मा गाँधी के साथ लन्दन गई जिसका भारतीय ब्रिटिश सहयोग को बढ़ावा देना था उन्होंने महिला एसोसिएशन की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, 1925 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

रमा देवी चौधरी (1899–1985) :–

1930 में उन्होंने ओडिशा में नमक सत्याग्रह आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई और महिलाओं को स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने हरिजन सेवा संघ की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाड़ी में एक आश्रम की स्थापना की जिसे महात्मा गाँधी ने सेवा घर नाम दिया।

विजय लक्ष्मी पंडित (1900–1990) :–

1917 में उन्होंने संयुक्त प्रान्त के चुनाव जीतकर मंत्री के रूप में कैबिनेट पर संभालने वाली पहली महिला बनी, उन्होंने 1941–1943 तक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, तथा लैंगिक अधिकारों और महिला कल्याण की वकालात की, एनसीएम, सीडीएम, और भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया, और संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला का गौरव प्राप्त किया।

कमला देवी चट्टोपाध्याय (1903–1988) :–

वह एक स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थी वह 1923 में लन्दन से भारत लौटी और सेवा हल में शामिल हो गई।

गाँधीजी के नमक सत्याग्रह के दौरान, उन्हें बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज में प्रतिबंधि तनमक बेचने के प्रयास के लिए गिरफ्तार किया गया, उन्होंने 1936 में जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की और 1937 में इसकी अध्यक्ष बनी। कमला देवी ने केन्द्रीय विधानसभा में बाल विवाह निरोधक विधेयक और सहमति की आयु विधेयक को पारित कराने के लिए सक्रिय रूप से वकालात की। उन्होंने घरेलु और पेशेवर दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के अधिकारों की वकालात की और समान नागरिक संहिता का समर्थन किया।

सुचेता कृपलानी (1908–1974) :–

उन्होंने महिला अधिकारों और सशक्तिकरण की वकालात करते हुए 1940 में अखिल भारतीय महिला काँग्रेस की स्थापना की। उन्होंने विभाजन के दंगों के समय महात्मा गाँधी के साथ मिलकर काम किया और 1946 में उनके साथ नोआखली भी गयी।

उन्हें संविधान सभा के सदस्य के रूप में भारतीय संविधान का मसादा तैयार करने में भाग लेने वाली 15 महिलाओं में से एक के रूप में चुना गया, यह उत्तरप्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री थी।

अरूणा आसिफ अली (1909–1996) :–

उन्हें व्यापक रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन की 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' के रूप में मान्यता प्राप्त थी उनके सबसे उल्लेखनीय कार्यों में से एक 1942 में भारत छोडो आन्दोलन के दौरान बाम्बे के गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराना था।

बीना दास (1911–1986) :–

वह कोलकाता स्थित अर्ध–क्रांतिकारी महिला संगठन छत्री संघ की सदस्य थी। 6 फरवरी 1932 को उन्होंने कलकत्ता विश्वविघालय के दीक्षांत समारोह हॉल में बंगाल के गवर्नर स्टेनली जैकसन पर हत्या का प्रयास किया। 1939 में वह काँग्रेस पार्टी में शामिल हो गयी। और भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रीतिलता वद्देदार (1911–1932) :–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

उन्होंने 1932 में पहारताली यूरोपीय कल्ब पर सशस्त्र हमले में पन्द्रह क्रांतिकारियों के एक समूह का नेतृत्व करने के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की, जिसके परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति की मौत हो गई। और ग्यारह अन्य घायल हो गये। कल्ब में आग लगाने के बाद क्रांतिकारियों का ब्रिटिश पुलिस द्वारा पीछा किया गया। पकडे जाने से बचने के लिए प्रीतिलता ने साइनाइड खा लिया जिससे उसकी मौत हो गई।

कल्पना दत्त (1913–1995) :–

एक क्रांतिकारी थी जिन्होंने 1930 में सूर्यसेन के चटगाँव शस्त्रागार लूट में भाग लिया था। वह खुदीराम बोस की शहादत से प्रेरित हुई और कोलकाता में महिलाओं के अर्द्ध–क्रांतिकारी संगठन, छत्री संघ में शामिल हो गई।

लक्ष्मी सहगल (1914–2012) :–

कैप्टन लक्ष्मी सहगल आजाद हिन्द फौज या भारतीय राष्ट्रीय सेना की सदस्य थी। उन्हें महिला मामलों और झांसी की रानी रेजिमेंट की जिम्मेदारियाँ दी गई, उन्होंने आई. एन. ए. में महिलाओं की भती। की और 1500 महिला सैनिकों की एक रेजिमेंट बनाई वह दिल्ली में लाल किला ट्रायल के लिए खड़ी हुई।

रानी गाइ दिन्ल्यू (1915–1993) :–

वह एक स्वतंत्रता सेनानी थी जो रोंगमेई जनजाति से सम्बंधित थी, जिसे काबुई के नाम से भी जाना जाता था और नागाओं के बीच एक आध्यात्मिक और राजनीति नेता थी उन्होंने मणिपुर, नागालैण्ड और असम में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करने में प्रमुख भूमिका निभाई, 13 साल की उम्र में वह अपने चचेरे भाई जादोनावा के साथ हेराका आन्दोलन में शामिल हो गई। इस आन्दोलन का उद्देश्य नागा आदिवासी धर्म का पुनर्जीवित करना और नागाओं के लिए स्वशासन स्थापित करना था जिससे ब्रिटिस शासन समाप्त हो गया।

उषा मेहता (1920–2000) :–

1928 में आठ वर्ष की आयु में उन्होंने साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध मार्च में भाग लिया, 14 अगस्त 1942 को उन्होंने और उनके साथियों ने सीक्रेट काँग्रेस रेडियो की स्थापना की जो एक गुप्त रेडियो स्टेशन था जो 27 अगस्त को प्रशारित हुआ। इसने स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं को जनता से जोडे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुप्त काँग्रेस रेडियो ने चटगाँव बम विस्फोट, जमशेदपुर हड़ताल और बिहार और महाराष्ट्र में समानांतर सरकारों के कामकाज जैसे महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रसारण किया।

कनकलता बरूआ (1924–1942) :–

वह भारत छोड़ो आन्दोलन की सबसे कम उम्र की शहीदों में से एक थी और असम में उनका एक प्रतिष्ठित स्थान था। 17 वर्ष की आयु में उन्होंने 20 सितम्बर 1942 को गोहपुर पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने के लिए एक जुलूस में स्वतंत्रता सेनानियों के एक समूह मुक्ति वाहिनी का नेतृत्व किया। दुर्भाग्य से एक जुलूस के दौरान उन्होंने अपनी जान गवा दी।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओ की भागीदारी का महत्व :–

महिलाओं ने राष्ट्रवादी आन्दोलन को एकजुटता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि 'महिला' की सार्वभौमिक श्रेणी ने सभी विभाजनों को पार कर लिया।

राष्ट्रवादियों ने 'भारत माता' को अवधारणा का उपयोग राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काने और ब्रिटिश शासन को अवैध ठहराने के लिये किया, जिसने सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को भी वैध बना दिया।

प्रभावी प्रतिरोध के लिए महिलाओं का समर्थन आवश्यक था जैसे विदेशी कपड़े का बहिष्कार करना और दुकानों पर धरना देना।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

महिला बुद्धिजीवियों ने नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभाई और विस्तरित महिला क्षेत्र से महिलाओं की भागीदारी को सुगम बनाया, जिससे घरेलू और सार्वजनिक दुनिया के बीच एक मध्यवर्ती सामाजिक स्थान का निर्माण हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें सशक्त बनाया और उन्हें घरेलू बन्धनों से बाहर निकालकर सार्वजनिक जीवन व्यवसायों और शासन की भूमिकाओं में लाया। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत किया और लैंगिक समानता के द्वार खोले।

निष्कर्ष :—

विरोध प्रदर्शनों जमीनी स्तर पर प्रयासों और सविनय अवज्ञा में महिलाओं की विविध सक्रिय भागीदारी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के ताने–बाने को समृद्ध किया। ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय राष्ट्रवादियों ने महसूस किया कि महिलाओं की भागीदारी ने राष्ट्रीय संघर्ष को बहुत मजबूत किया। महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद स्वतंत्रता से पहले और बाद के दोनों ही युगों में लैंगिक समानता की चुनौतियों का सामना करना पडा, जिससे राजनीतिक परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता उजागर हुई। सुधार के परस्पर जुडे रास्तों को उजागर किया तथा जड़ जमाये हुए पितृसत्तात्मक मापदण्डों और संरचनात्मक असंतुलनों के खिलाफ सतत् संघर्ष पर बल दिया।

संदर्भ सूची :—

1 पुष्पा जोशी, गाँधी ऑन वुमेन, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1988 पृ. 30–31

2 अनिल दत्ता मिश्रा और सुषमा यादव (सं.) सोशियो–पॉलिटीकल थॉट, वाल्यूम–3

3 करतार सिंह, रूरल डेवलपमेन्ट, प्रिंसिपल्स पॉलिसीज एंड मैनेजमेंट नई दिल्ली, 1999, पृ. –85, 86

4 लॉयड आई रूडोल्फ एंड सूशान एच रूडोल्फ, पोस्ट मार्डन गाँधी एंड अदर एसेज ऑक्सफोर्ड पब्लिशर्स, 2006, पृ.– 10

5 एम. एस. पटेल दी एजूकेशनल फिलोस्फी ऑफ महात्मा गाँधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद, 1953, पृ.– 109

6 उमेन टी. के., स्टेट एण्ड सोसाइटी इन इंडिया स्टडीज इन नेशन बिल्डिंग, नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन 1990

7 कृष्णमूर्ति जे. एजुकेशन एंड सिग्निफिकेस ऑफ लाइफ, नई दिल्ली, बी. आई पब्लिकेशन प्राइवेट लि. 1987, पृ.–63